पञ्चविंश खण्ड

काशीपुर-बागान में नरेन्द्रादि भक्तों के संग ठाकुर श्रीरामकृष्ण

प्रथम परिच्छेद

(बुद्धदेव और ठाकुर श्रीरामकृष्ण)

श्रीरामकृष्ण भक्तों के संग में काशीपुर-बागान में हैं। आज शुक्रवार, समय 5 का— चैत्र शुक्ला पञ्चमी, 9 अप्रैल, 1886 ईसवी।

नरेन्द्र, काली, निरंजन, मास्टर नीचे बैठे हुए बातें कर रहे हैं।

निरंजन *(मास्टर के प्रति)*— विद्यासागर का नया एक स्कूल शायद होगा? नरेन्द्र को इसका कोई काम मिल जाए!

नरेन्द्र— विद्यासागर के पास और नौकरी करने का काम नहीं!

नरेन्द्र अभी बुद्धगया से लौटे हैं। वहाँ पर बुद्धमूर्ति-दर्शन किए एवं उस मूर्ति के सम्मुख गम्भीर ध्यान में निमग्न हो गए थे। जिस वृक्ष के नीचे बुद्धदेव को तपस्या करके निर्वाण प्राप्त हुआ था, उसी वृक्ष के स्थान पर एक नूतन वृक्ष हो गया है, उसका भी दर्शन किया था। काली ने बताया, ''एक दिन गया के उमेश बाबू के घर में नरेन्द्र ने गाना गाया था— मृदंग के साथ; ख्याल, ध्रुपद इत्यादि।''

श्रीरामकृष्ण हाल कमरे में बिछौने पर बैठे हुए हैं। रात्रि कई दण्ड* हो गई है। मणि एकाकी पंखा कर रहे हैं— लाटु आकर बैठ गए।

---

* दण्ड = 60 पल या 24 मिनट का समय।

श्रीरामकृष्ण *(मणि के प्रति)*— एक गायेर चादर (शाल) और एक जोड़ा चटि जूता (एक जोड़ी स्लीपर) लाना।

मणि— जो आज्ञा।

श्रीरामकृष्ण *(लाटु से)*— चद्दर दस आने की और जूता— सब मिला कर कितना दाम हुआ?

लाटु— एक रुपया दस आना।

ठाकुर ने मणि को दाम की बात सुनने के लिए इंगित किया।

नरेन्द्र आकर बैठ गए। शशी, राखाल तथा और भी दो-एक भक्त आकर बैठ गए। ठाकुर नरेन्द्र को पैरों पर हाथ फेरने के लिए कह रहे हैं।

श्रीरामकृष्ण इंगित करके नरेन्द्र से पूछ रहे हैं— ''खाया?''

(बुद्धदेव क्या नास्तिक? 'अस्ति, नास्ति के मध्य की अवस्था')

श्रीरामकृष्ण *(मास्टर के प्रति, सहास्य)*— वहाँ पर (अर्थात् बुद्धगया) गया था।

मास्टर *(नरेन्द्र के प्रति)*— बुद्धदेव का क्या मत है?

नरेन्द्र— उन्होंने तपस्या के पश्चात् क्या पाया, वह मुख से नहीं बोल सके। इसी कारण सब ही कहते हैं 'नास्तिक'।

श्रीरामकृष्ण *(इंगित करके)*— नास्तिक क्यों? नास्तिक नहीं, मुख से नहीं बोल सके। बुद्ध क्या है, जानते हो? बोध-स्वरूप का चिन्तन कर-कर के वही होना— बोध-स्वरूप होना।

नरेन्द्र— जी हाँ। इनकी तीन श्रेणियाँ हैं— बुद्ध, अर्हत् और बोधि-सत्व।

श्रीरामकृष्ण— यह है उनका ही खेल— नूतन एक विशेष लीला।

''नास्तिक क्यों होने जाएगा! जहाँ पर स्वरूप का बोध होता है, वहाँ पर अस्ति-नास्ति के मध्य की अवस्था है।''

नरेन्द्र *(मास्टर के प्रति)*— यह वह अवस्था है जिसमें contradictions

meet (विरोध-समन्वय) है— जिस हाइड्रोजन और ऑक्सीजन से शीतल जल तैयार होता है, उसी हाइड्रोजन और ऑक्सीजन के द्वारा ऑक्सिहाइड्रोजन-ब्लोपाइप Oxyhydrogen-blowpipe— (ज्वलन्त, अति उष्ण अग्नि-शिखाएँ) उत्पन्न होती हैं।

''जिस अवस्था में कर्म और कर्मत्याग दोनों ही सम्भव हैं अर्थात् निष्काम कर्म।

''जो संसारी इन्द्रियों के विषय लेकर रहते हैं, वे कहते हैं, सब 'अस्ति' और मायावादीगण कहते हैं— 'नास्ति'। बुद्ध की अवस्था इसी 'अस्ति', 'नास्ति' के परे है।

श्रीरामकृष्ण— यह अस्ति, नास्ति प्रकृति का गुण है। जहाँ पर ठीक-ठीक बोध है, वहाँ अस्ति, नास्ति नहीं है।

भक्तगण कुछ क्षण सब चुप रहे। ठाकुर फिर और बातें करते हैं।

(बुद्धदेव की दया और वैराग्य और नरेन्द्र)

श्रीरामकृष्ण *(नरेन्द्र के प्रति)*— उनका (बुद्धदेव का) क्या मत है?

नरेन्द्र— ईश्वर हैं कि नहीं, ऐसी बातें बुद्ध मुख से नहीं बोलते थे। किन्तु दया ली थी।

''एक बाज अपने शिकार पक्षी को पकड़कर खाने लगा, बुद्ध ने उस शिकार के प्राण बचाने के लिए अपने शरीर का माँस उसको दिया था।''

ठाकुर श्रीरामकृष्ण चुप हैं। नरेन्द्र उत्साह के साथ बुद्धदेव की और बातें भी बता रहे हैं।

नरेन्द्र— कैसा वैराग्य! राजा का लड़का होकर सब त्याग कर दिया! जिनका कुछ नहीं है— कोई भी ऐश्वर्य नहीं, वे फिर क्या त्याग करेंगे?

''जब बुद्ध होकर, निर्वाण-लाभ करके, घर में एक बार आए, तब स्त्री को, पुत्र को— राजवंश के अनेकों को— वैराग्य अवलम्बन करने के

लिए कहा। कैसा वैराग्य! किन्तु इधर व्यासदेव का आचरण देखिए— शुकदेव को (संसार-त्याग के लिए) मना करके कहा— पुत्र, गृहस्थ में रहकर धर्म करो!''

ठाकुर चुप किए हुए हैं। अभी भी कोई भी बात नहीं कह रहे।

नरेन्द्र— शक्ति-भक्ति (बुद्ध) कुछ नहीं मानते थे। केवल निर्वाण या वैराग्य। वृक्षतले तपस्या करने के लिए बैठ गए, और बोले— 'इहैव शुष्यतु मे शरीरम्!' अर्थात् यदि निर्वाण लाभ नहीं करता हूँ, तो फिर मेरा शरीर यहीं पर सूख जाए— यह दृढ़ प्रतिज्ञा!

''शरीर ही तो बदमायश (बदमाश) है! उसको काबू किए बिना क्या कुछ होता है!''

शशी— किन्तु तुम जो कहते हो, माँस खा लेने से सत्त्वगुण होता है।— माँस खाना उचित है, यह बात तो कहो।

नरेन्द्र— जैसे माँस खाता हूँ— वैसे ही (माँस त्याग करके) केवल भात भी खा सकता हूँ— लून (नमक) न डालकर भी केवल भात खा सकता हूँ।

कुछ क्षण परे ठाकुर श्रीरामकृष्ण बातें कर रहे हैं। फिर और बुद्धदेव की बातें इंगित करके जिज्ञासा कर रहे हैं।

श्रीरामकृष्ण— बुद्धदेव के सिर पर जूड़ा (झुंटि) है?

नरेन्द्र— जी नहीं, रुद्राक्ष की माला को बहु बार एकत्रित करने पर जो होता है, वैसा ही सिर पर है।

श्रीरामकृष्ण— चक्षु?

नरेन्द्र— चक्षु समाधिस्थ।

(ठाकुर श्रीरामकृष्ण का प्रत्यक्ष दर्शन— 'मैं ही वह')

ठाकुर चुप किए हुए हैं। नरेन्द्र और अन्यान्य भक्तगण उन्हें एकदृष्टि से देख रहे हैं। हठात् उन्होंने ईषत् हास्य करके नरेन्द्र के संग फिर और बातें आरम्भ कीं। मणि हवा कर रहे हैं।

श्रीरामकृष्ण *(नरेन्द्र के प्रति)*— अच्छा, यहाँ पर सब है ना? मसूर की दाल, चने की दाल, इमली पर्यन्त।

नरेन्द्र— आप वे सब अवस्थाएँ भोग करके नीचे रह रहे हैं!

मणि *(स्वगत)*— सब अवस्था भोग करके भक्त की अवस्था में!

श्रीरामकृष्ण— कौन (कोई) जैसे नीचे खींचकर रखे हैं!

यह कहकर ठाकुर श्रीरामकृष्ण ने मणि के हाथ से पंखा ले लिया एवं फिर और बातें करने लगे।

श्रीरामकृष्ण— यह पंखा जैसे देख रहा हूँ, सामने— प्रत्यक्ष— ठीक वैसे ही मैं (ईश्वर को) देख रहा हूँ! और मैंने देखा है—

यह कह कर ठाकुर अपने हृदय के ऊपर हाथ रखकर इंगित कर रहे हैं और नरेन्द्र से कह रहे हैं,

''क्या कहा मैंने, बता ज़रा?''

नरेन्द्र— समझ गया।

श्रीरामकृष्ण— बता, देखूँ?

नरेन्द्र— अच्छी तरह नहीं सुना।

श्रीरामकृष्ण और दोबारा इंगित कर रहे हैं—

देखा है, वे (ईश्वर) और हृदय के मध्य जो है, एक व्यक्ति है।

नरेन्द्र— हाँ, हाँ, सोऽहम्।

श्रीरामकृष्ण— किन्तु एक विशेष रेखामात्र है— ('भक्त का मैं' है) सम्भोग जन्य।

नरेन्द्र *(मास्टर से)*— महापुरुष निज का उद्धार हो जाने पर जीव के उद्धार जन्य रहते हैं— अहंकार लेकर रहते हैं— देह का सुख-दुःख लेकर रहते हैं।

''जैसे कुलीगिरी, हमारी कुलीगिरी है on compulsion (जरूरत पड़ने पर)। महापुरुष कुलीगिरी करते हैं शौक से।''

(ठाकुर श्रीरामकृष्ण और गुरु-कृपा)

फिर सब चुप हैं। अहेतुक कृपासिन्धु ठाकुर श्रीरामकृष्ण फिर और बातें कर रहे हैं। आप (स्वयं) क्या हैं, यह तत्त्व नरेन्द्र आदि को फिर और समझा रहे हैं।

श्रीरामकृष्ण *(नरेन्द्रादि भक्तों के प्रति)*— छत तो दिखाई देती है! किन्तु छत के ऊपर चढ़ना बड़ा कठिन है।

नरेन्द्र— जी हाँ।

श्रीरामकृष्ण— किन्तु यदि कोई चढ़ा हुआ हो तो रस्सी डालकर और एक जन को उठा ले जा सकता है।

(ठाकुर श्रीरामकृष्ण की पाँच प्रकार की समाधि)

''ऋषिकेश का साधु आया था। उसने मुझसे कहा, 'कैसा आश्चर्य है! तुम में पाँच प्रकार की समाधि देखी है!

''कभी कपिवत्— देहवृक्ष में बन्दर की भाँति महावायु जैसे इस डाल से उस डाल पर एक-एक बार छलाँग मार कर चढ़ती है और समाधि हो जाती है।

''कभी मीनवत्— मछली जैसे जल के भीतर भी सड़ात्-सड़ात् करके (तेज़ गति से) चली जाती है और सुख से विहार करती है, वैसे ही महावायु देह के भीतर चलती रहती है और समाधि हो जाती है।

''अथवा कभी पक्षीवत्— देहवृक्ष पर पक्षी की भाँति कभी इस डाल पर, कभी उस डाल पर।

''कभी पिपीलिकावत्— महावायु च्युंटी की न्यायीं थोड़ा-थोड़ा करके भीतर ही भीतर चढ़ती रहती है, तत्पश्चात् सहस्रार में वायु चढ़ जाने पर समाधि हो जाती है।''

''कभी अथवा तिर्यकवत्— अर्थात् महावायु की गति सर्प की न्यायीं

टेढ़ी-मेढ़ी (ऐंकी-बैंकी) होती है; फिर सहस्रार में जाकर समाधि।''

राखाल *(भक्तों के प्रति)*— बस, और बातें रहने दो, बहुत बातें हो गई हैं; (ठाकुर को) असुख होगा।